Regd. With the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg. No. GDP-41/2017-19

मासिक

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

सितम्बर / 2020 ई०

Annual Subscription: Rs. 210/- (Per Issue: Rs. 20/-
(Weight : 50-100, grms / Issue)

मज्लिस अन्सारुल्लाह हैदराबाद की ओर से निर्धन एवं असहाय लोगों को भेंट किए जाने हेतु सामग्री के बैग।

मज्लिस अन्सारुल्लाह हैदराबाद की ओर से निर्धन एवं असहाय लोगों को भेंट किए जाने हेतु सामग्री का दृश्य ।

मज्लिस अन्सारुल्लाह चेलाकरा ज़िला त्रिशूर केरला गूगल मेट द्वारा आयोजित तर्बियती इज्लास का दृश्य।

आदरणीय कलीम खान साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज हैदराबाद दो पुलिस अधिकारीयों को जमाअत का परिचय करवाते हुए।

तिथि 23 अगस्त 2020 ई.आदरणीय सदर साहिब मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत गूगलमेट द्वारा केरला राज्य के नाज़मीन के साथ मीटिंग करते हुए।

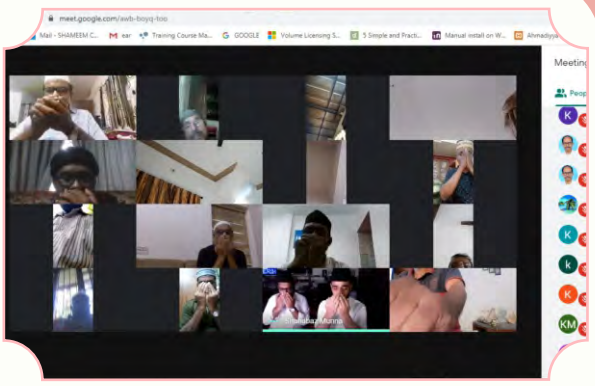

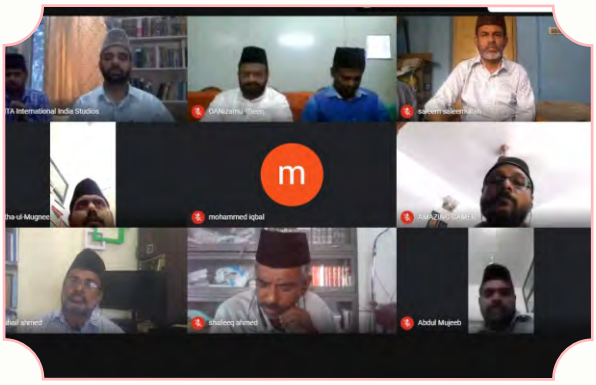

तिथि 30 अगस्त 2020 ई.आदरणीय सदर साहिब मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत गूगलमेट द्वारा तामिलनाडू राज्य के नाज़मीन के साथ मीटिंग करते हुए।

तिथि 30 अगस्त 2020 ई. को मज्लिस अन्सारुल्लाह चेलाकरा ज़िला त्रिशूर केरला द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल का दृश्य।

तिथि 30 अगस्त 2020 ई. को मज्लिस अन्सारुल्लाह चेलाकरा ज़िला त्रिशूर केरला द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल का तीसरा दृश्य।

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 18 **सितम्बर 2020** **Issue - 9**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - खाया हुआ याद रहता है	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन - सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के ख़िताब के प्रमुख बिन्दु	6
समापन ख़िताब हुज़ूर अनवर(अ) सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह बर्तानिया 2019 ई(भाग..1)	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اَحْسَنُوْا ؕ وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ

(सूरः अल- अहज़ाब आयत 57)

अनुवाद -वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उन पर इस में कोई गुनाह नहीं जो वे खाते हैं बशर्तिके कि वे तक़्वा धारण करें और ईमान लाएं और नेक कर्म करें फिर (इसी तरह तक़्वा धारण करें और (इसी तरह ईमान लाएं फिर और फिर तक़्वा धारण करें और उपकार करें और अल्लाह उपकार करने वालों से मुहब्बत करता है।

दर्सुल हदीस

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللهِ مَنْ اَكْرَمُ النَّاسِ؟ قَالَ اَتْقَاهُمْ، فَقَالُوْا لَيْسَ عَنْ هٰذَا نَسْأَلُكَ قَالَ فَيُوْسُفُ نَبِیُّ اللهِ بْنُ نَبِیِّ اللهِ بْنِ نَبِیِّ اللهِ بْنِ خَلِيْلِ اللهِ، قَالُوْا لَيْسَ عَنْ هٰذَا نَسْأَلُكَ، قَالَ فَعَنْ مَعَادِنِ الْعَرَبِ تَسْأَلُوْنِیْ؟ خِيَارُهُمْ فِی الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِی الْاِسْلَامِ اِذَا فَقِهُوْا۔

(बुख़ारी किताबुल अंबिया बाब कौलल्लाह तआला **كان يوسف واخوته اٰيات للسائلين**)

अनुवाद - हज़रत अबूहुरैरा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि लोगों में से अधिक सम्मान वाला कौन है? हज़ूर ने फ़रमाया। लोगों में से जो अधकि मुत्तक़ी है। सहाबा रज़ि ने निवेदन किया हम रुहानी सम्मान के बारे में नहीं पूछ रहे। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया। अल्लाह तआला के नबी हज़रत यूसुफ़ जो अल्लाह तआला के नबी के बेटे थे और अल्लाह तआला के नबी (असहाक)के पोते और ख़लीलुल्लाह के पड़ पोते थे । सहाबा रज़ि ने निवेदन किया। हम उस के बारे में भी नहीं पूछ रहे। हज़ूर ने फ़रमाया तो क्या तुम अरब के उच्च ख़ानदानों के बारे में पूछ रहे हो? उनमें से जो जाहिलियत में सम्मान्नीय थे इस्लाम में भी सम्मान्नीय हैं बशर्ति के वे धर्म को समझते और इस का फ़हम रखते हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

अल्लाह तआला मत्तक़ी को व्यर्थ की ज़रूरतों को मुहताज नहीं बनाता।

"हमेशा देखना चाहिए कि हम ने तक्वा तथा पवित्रता में कहां तक उन्नति की। इस का माप दण्ड कुरआन है। अल्लाह तआला ने मुत्तकियों के निशानों में से एक यह भी रखा है कि अल्लाह मुत्तकी को दुनिया के कामों से आज़ाद कर के उस के कामों को ख़ुदा करने वाला हो जाता है।

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

(सूरह अत्तलाक 3.4)

जो आदमी अल्लाह तआला से भय रखता है अल्लाह तआला प्रत्येक मुसीबत में उस के लिए परेशानी से बचाव का रास्ता रख देता है और उस के लिए इस तरह को रोज़ी के सामान पैदा कर देता है कि उस के ज्ञान में भी नहीं होता। अर्थात यह भी एक निशानी मुत्तकी की है कि अल्लाह तआला मुत्तकी को न चाहने वाली ज़रूरतों का मुहताज नहीं करता। जैसे एक दुकानदार यह विचार करता है कि झूठ बोले बिना इस का काम नहीं चल सकता इस लिए वह झूठ बोलने के नहीं रुकता। और झूठ बोलने के लिए मजबूरी प्रकट करता है परन्तु यह बात हरगिज़ सच नहीं। ख़ुदा तआला मुत्तकी का ख़ुद सुरक्षा करने वाला हो जाता है और उसे इस तरह के अवसरों से बचा लेता है जो सच्चाई के ख़िलाफ बोलने पर मजबूर करने वाले हों। याद रखो जब अल्लाह तआला को किसी न छोड़ा, तो खुदा ने उसे छोड़ दिया। जब रहमान ने छोड़ दिया, तो जरूर शैतान अपना रिश्ता जोड़ेगा।

(रिपोर्ट जलसा सालाना 1897 ई पृष्ठ 34, मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 8 प्रकाशन नवीन)

"तक़्वा के बहुत से अंग हैं। अहंकार, अपने आप को ऊंचा समझना, हराम माल से परहेज़ और बुरे आचरण से बचना भी तक़्वा है। जो व्यक्ति अच्छे आचरण को प्रकट करता है इस के दुश्मन भी दोस्त हो जाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ (उल-मोमिन 97)अब ख़्याल करो कि यह हिदायत क्या शिक्षा देती है? इस हिदायत में अल्लाह तआला की यह इच्छा है कि यदि विरोधी गाली भी दे तो उसका जवाब गाली से न दिया जाए बल्कि इस पर सब्र किया जाए। इस का नतीजा यह होगा कि विरोधी तुम्हारी फ़ज़ीलत को मानने वाला होकर ख़ुद ही लज्जित और शर्मिंदा होगा और यह सज़ा इस सज़ा से बहुत बढ़कर होगी जो इंतिक़ामी तौर पर तुम उस को दे सकते हो।" फ़रमाते हैं "''यूं तो एक ज़रा सा आदमी क़तल तक मामला पहुंचा सकता है लेकिन इन्सानियत का तक़ाज़ा और तक़्वा का अर्थ यह नहीं है। उत्तम आचरण एक ऐसा गुण है कि कठोर से कठोर इन्सान पर भी इस का प्रभाव पड़ता है। किसी ने क्या अच्छा कहा है कि (फ़ारसी में)

लुत्फ़ कुन लुत्फ़ कि बेगाना शवद हल्क़ा बगोश

(कि मेहरबानी से पेश आओ तो बेगाने भी तुम्हारे दोस्तों में शामिल हो जाऐंगे।

(मल्फूज़ात वह्य रुहानी भाग 1 पृष्ठ 68,69)

सम्पादकीय

खाया हुआ याद रहता है

ज्ञान की प्राप्ति के लिए बसीरत का दृष्टिकोण (Insight Theory) बहुत प्रभावकारी तरीक़ा है। अर्थात वह ज्ञान जो हम ख़ुद सीखते हैं। इस सिलसिला में कोहलर (Kohler)का अनुभव बहुत मशहूर है। उस ने छ: जंगली जानवरों को एक कमरे में बंद कर दिया। कमरे की छत में एक केला लटका दिया और कुछ दूरी पर एक संदूक़ रख दिया। जंगली जानवरों ने उछल कूद करके केले को प्राप्त करने की कोशिश की परन्तु वे सफल नहीं हुए। हाँ एक जानवर ने इस संदूक़ को खींच कर केले के नीचे किया। फिर उस पर चढ़कर उछल कर केला ले लिया।(जदीद तालीमी नफ़सियात :एजूकेशनल बुक हाऊस अलीगढ़) मानो यह नियम बच्चा को चेष्ठा कर के ज्ञान की प्राप्ति के लिए तैयार करता है। अत: जो इन्सान पूरे ध्यान और एकाग्रत के साथ नमाज़ अदा करेगा उसे नमाज़ में ऐसा आन्नद और मज़ा प्राप्त होगा कि वह फिर कभी नमाज़ के अदा करने में सुस्ती नहीं कर्गा। चूँकि उसके बिना ख़ुद को भूखा और प्यासा महसूस करता है। वह न केवल ज़ौक़ तथा शोक से नमाज़ वक़्त पर अदा करेगा बल्कि नमाज़ के लिए प्रतीक्षा करेगा। इन्सानी पैदाइश का उद्देश्य अल्लाह तआला की इबादत है। अत: इबादत में ही दोनों लोकों की सफलती छुपी है। नमाज़ में लज़्ज़त न आने का कारण और इस का ईलाज बताते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं

" ख़ुदा तआला से बहुत दर्द और वेदना से एक जोश के साथ यह दुआ मांगनी चाहीए कि जिस तरह फलों और चीज़ों की विभिन्न प्रकार के मज़े की लज़्ज़तें प्रदान की हैं। नमाज़ और इबादत का भी एक बार मज़ा चखा दे। खाया हुआ याद रहता है। देखो अगर कोई व्यक्ति किसी ख़ूबसूरत को एक आन्नद के साथ देखता है, तो वह उसे ख़ूब याद रहता है और फिर अगर किसी बुरी शक्ल और मकरूह चेहरा को देखता है, तो इस की सारी हालत उस की शक्ल के अनुसार प्रतिरूप हो कर सामने आ जाती है। हाँ। अगर कोई सम्बन्ध न हो तो, कुछ याद नहीं रहता। इसी तरह बे-नमाज़ों के नज़दीक नमाज़ एक जुर्माना है कि अकारण सुबह उठ कर सर्दी में वुज़ू करके नींद का मज़ा छोड़ कर कई प्रकार की सुविधाओं को खोकर पढ़नी पड़ती है। असल बात यह है कि उसे बेज़ारी है, वह इसको समझ नहीं सकता। इस लज़्ज़त और राहत से जो नमाज़ में है इसको सूचना नहीं है फिर नमाज़ में आन्नद कैसे हासिल हो। मैं देखता हूँ कि एक शराबी और नशा करने वाले इन्सान को जब मज़ा नहीं आता, तो वह एक के बाद दूसरा प्याला पीता जाता है, यहां तक कि इस को एक किस्म का नशा आ जाता है। समझदार और बुज़ुर्ग इन्सान इस से लाभ उठा सकता है और वह यह कि नमाज़ पर स्थायी रहे और पढ़ता जाए। यहां तक कि इस को मज़ा आ जाए और जैसे शराबी के ज़हन में एक मज़ा होता है, जिसका प्राप्त करना उस का मूल उद्देश्य होता है। इसी तरह से ज़हन में सारी ताक़तों का रुझान नमाज़ में उसी मज़ा का प्राप्त करना हो और फिर एक ख़ुलूस और जोश के साथ कम से कम इस नशा करने वाले की तरह परेशानी और तथा वेदना की तरह ही एक दुआ पैदा हो कि वह माज़ा प्राप्त हो तो मैं कहता हूँ और सच कहता हूँ कि अवश्यमेव वह मज़ा प्राप्त होग।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 104)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अपने मंजूम कलाम में फ़रमाते हैं।

रग़बते दिल से हो पाबन्द नमाज़ो रोज़ा
नज़र अंदाज़ कोई हिस्सा अहकाम न हो

नमाज़ में लीन होने के फलस्वरूप इन्सान क़िबला से पार ख़ुदा तक पहुंचता है, इबादत का मज़ा प्राप्त करता है। और यही हक़ीक़ी नमाज़ है।

है परे सरहदे इदराक से अपना मस्जूद
क़िबले को अहले नज़र क़िबलानुमा कहते हैं

वास्तव में नमाज़ बाजमाअत एक स्थायी और निरन्तर कार्य का नाम है। इसलिए हमें बार-बार उस की नसीहत और उपदेश किया जाता है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"केवल अगर हम बाजमाअत नमाज़ को ही ले लें तो वहां भी हमारे स्तर जो हैं बहुत पीछे हैं बल्कि ओहदेदारों के भी स्तर बहुत पीछे हैं। अगर हम अपनी समीक्षा करें तो बावजूद अन्सारुल्लाह कहलाने के हमारी हालत चिन्ता योग्य है। आप अलैहिस्सलाम तो जमअत के प्रत्येक व्यक्ति से उच्च स्तर चाहते हैं बावजूद यह कि अन्सारुल्लाह कहला कर इस तरफ़ ध्यान न दें जो ध्यान का हक़ है।"

(ख़िताब फ़र्मूदा 15सितम्बर 2019 ई)

अल्लाह ताला हमें उस की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन

(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya
CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO
All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities
Fort Road
KANNUR-1 (KERALA)
Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS
PRIVATE LIMITED
No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :
MUSADDIQ AHMAD
Mobile : 098451-98560
Tel : +91 (80) 41636612
Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़िताब के प्रमुख बिन्दु

15 सितम्बर 2019 ई को सालाना इजतिमा मजलिस अन्सारुल्लाह बर्तानिया केअवसर पर सय्यदना हज़रत अमीर अलममनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का बयान फ़र्मूदा ख़िताब का एक भाग इस संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है। समस्त अन्सार भाइयों से निवेदन किया जाता है कि वे इस ख़िताब का अध्ययन बहुत ध्यानपूर्वर करें। जैसा कि आप सबको पता है कि इस साल करोना महामारी के कारण से सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारल्लाह भारत आयोजित नहीं होगा। सय्यदना हुज़ूर अनवर के इसी ख़िताब को इस साल के लिए हमें हुज़ूर अनवर का पैग़ाम समझते हुए एक एक शब्द पर अनुकरण करने की ज़रूरत है। इस ख़िताब में वर्णन किए गए कुछ प्रमुख बिन्दुओं की तरफ़ विनीत आप का ध्यान फेरना चाहता है ताकि आप इस का ध्यानपूर्वर अध्ययन कर सकें।

(1)सय्यदना हुज़ूर अनवर ने इस ख़िताब में हमें विशेष रूप से अन्सारुल्लाह को नमाज़ बाजमाअत की तरफ़ निहायत दर्द से तवज्जा दिलाई है।

(2)हुज़ूर ने अन्सारुल्लाह को उच्च स्तर क़ायम करने की नसीहत फ़रमाई है। चूँकि अन्सारुल्लाह के नमूने नौजवानों के लिए सही दिशा निर्धारण करने, बच्चों के लिए रहनुमा और समाज में परिवर्तन लाने वाले होंगे।

(3)हुज़ूर अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के उद्धरों के हवाला से फ़रमाया कि सिर्फ नाम के मुस्लमान होना काफ़ी नहीं है , सिर्फ शब्दों और बातों से कुछ लाभ न होगा बल्कि व्यवहार काम आते हैं। हमारे कथन तथा कर्म बराबर हों और नहनो अन्सारुल्लाह अर्थात हम अल्लाह के अन्सार हैं का दावा हमारे व्यवहार से साबित होना चाहिए। कर्म न करने वाले मुस्लमानों की वजह से इस्लाम को दाग़ लगता है।

(4)अमल,अक़ल और कलाम इलाही से काम लेकर सच्ची मार्फ़त और यक़ीन हासिल करके दूसरों को अन्धेरों से नूर की तरफ़ लाने का माध्यम बनो।

(5)हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वादा कि मेरे मानने वाले इल्म तथा आध्यात्मिकता में कमाल हासिल करेंगे उन लोगों के हक़ में पूरा होगा जो कर्म करने वाले होंगे।

(6) हर अहमदी को तक़्वा की राह धारण करनी चाहिए क्योंकि शरीयत का सार ही तक़्वा है। हुज़ूर फ़रमाते हैं दुआ की क़बूलीयत के लिए तक़्वा ज़रूरी है।

(7)हर अहमदी अपनी समीक्षा ख़ुद ले सकता है। इस अन्तर्गत में सय्यदना हुज़ूर अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम का एक उद्धरण प्रस्तुत फ़रमाया कि तक़्वा के लिए अनिवार्य है कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी ग़ुर्बत और मिस्कीनी में गुज़ारे,अहंकार और क्रोध से बचे ,मिस्कीन से मिले और ग़रीब की बात सुने। चूँकि यह विनम्रता की बुनियाद है।

(8)हुज़ूर अनवर ने एक विशेष बात वर्णन फ़रमाई

कि तक़्वा होगा तो धार्मिक उलूम के साथ दुनयावी उलूम के भी रास्ते खुलेंगे। उनकी भी समझ प्राप्त होगी और इस से फिर इलम तथा मार्फ़त में भी तरक़्क़ी होगी।

(9) इस्लाम के विरोधी इस्लाम के ख़िलाफ़ छ: करोड़ किताबें लिख चुके हैं। यह अजीब बात है कि हिन्दुस्तान में इस वक़्त मुस्लमानों की संख्या भी छ: करोड़ ही थी। इसलिए अब हमारी सबसे बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि इस्लाम को समझें अपनी हालतों को बेहतर करें और अल्लाह तआला से सम्बन्ध पैदा करें और हक़ीक़ी इस्लाम दुनिया को दिखाने के लिए मैदान में उतरें।

(10) सय्यदना हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अन्सार की उम्र तो ऐसी होती है कि उनको तो बड़ी फ़िक्र रहनी चाहिए।

(11)हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के एक उद्धरण के हवाला से सय्यदना हुज़ूर अनवर ने अज़ाब इलाही नाज़िल होने से पहले तौबा करने ,हम अन्सारुल्लाह को ख़ास तौर पर तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठने की कोशिश करने और पाँच वक़्त की नमाज़ें निहायत शौक के साथ अदा करने,दुआ करने और नेक नमूने क़ायम करने की तरफ़ तवज्जा दिलाई।

वास्तव में समय के ख़लीफ़ा की आवाज़ में ख़ुदा की इच्छा शामिल होती है। अल्लाह तआला हमें इन हिदायतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed **Cell : 9949310679**
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

क्या हम अन्सारुल्लाह कहलाते हुए अपनी ज़िन्दगियां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार ढालने की चेष्टा कर रहे हैं।

समापन ख़िताब अमीरुल मोमनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह यूके दिनांक 15 सितम्बर 2019 ई (भाग..1)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ- بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿۱﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿۳﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۴﴾ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿۵﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿۷﴾

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत की संख्या में उन्नति के साथ मज्लिस अन्सारुल्लाह की भी उन्नति हो रही है और गिनती के अनुसार विभिन्न प्रोग्रामों में और विभिन्न एकटवेटीज़ में मज्लिस अन्सारुल्लाह के मैंबरों का प्रतिनिधित्व भी बढ़कर नज़र आता है परन्तु इन समस्त बातों के साथ अन्सारुल्लाह को या मज्लिस अन्सारुल्लाह के मैंम्बरों को जो वास्तविक समीक्षा अपनी करनी चाहिए वह इस पर करनी चाहिए कि क्या हम अन्सारुल्लाह कहलाते हुए अपनी ज़िन्दगियां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार ढालने की कोशिश कर रहे हैं? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे क्या चाहते हैं? जब तक हम एक फ़िक्र के साथ इस बात की तलाश नहीं करेंगे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा की रोशनी में जो वास्तव में क़ुरआन करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा है अपना ध्येय क्रमबध करके बार-बार उस की समीक्षा नहीं करेंगे हम अपनी ज़िंदगियां इस शिक्षा की रोशनी में ढाल नहीं सकते।

यह नहीं समझना चाहिए कि बार-बार हमारे सामने एक ही तरह की कुछ बातें दुहराई जाती हैं। कई बार मैं भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ हवाले बार-बार प्रस्तुत करता हूँ। इस से शायद कोई यह विचार करे बल्कि कुछ यह विचार करते भी हैं कि क्या इन हवालों से बाहर हमें निकलना भी है कि नहीं? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो हर विषय पर बेशुमार लिखा। हर प्रकार के उद्धरण मौजूद हैं। क़ुरआन करीम की एक तफ़सीर है जो आप के इर्शादात में हमें मिलती है, आप की पुस्तकों में मिलती है परन्तु कुछ बातें ऐसी हैं जो बुनियादी हैं और जिन्हें बार-बार हमें अपने सामने लाते रहना चाहिए। मैं कहता हूँ कि क्या हम में से अस्सी प्रतिशत ने इन बातों पर अनुकरण करना शुरू कर दिया है जो आपके सामने बार-बार लाई जाती हैं? और अपनी ज़िन्दगियों को इस के अनुसार ढाल रहे हैं जो विभिन्न अवसरों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी जिनकी बार-बार हमें नसीहत फ़रमाई और जो हमारे सामने प्रस्तुत फ़रमाए? या अस्सी प्रतिशत तो बड़ी बात है साठ प्रतिशत या पच्चास प्रतिशत या चालीस प्रतिशत भी इस पर अनुकरण हो रहा है जो हम बातें सुनते हैं कि उन पर अनुकरण करें। सिर्फ यदि हम बाजमाअत नमाज़

को ही ले लें तो वहां भी हमारे स्तर जो हैं बहुत पीछे हैं बल्कि उहदेदारों के भी स्तर बहुत पीछे हैं। यदि हम अपनी समीक्षा करें तो बावजूद अन्सारुल्लाह कहलाने के हमारी हालत चिन्ता के योग्य है। आप अलैहिस्सलाम तो जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति से उच्च स्तर चाहते हैं बावजूद यह कि अन्सारुल्लाह कहला कर इस तरफ़ ध्यान न दें जो ध्यान देने का हक़ है। हमारे नमूने ही हैं जो नौजवानों के लिए भी सही दिशा निर्धारण करने वाले होंगे। हमारे नमूने ही हैं जो हमारे बच्चों के लिए भी रहनुमा होंगे। हमारे नमूने ही हैं जो परिवेश में तब्दीलियां लाने वाले होंगे। हमें अपनी इबादतों के स्तरों को भी देखना होगा अपने आचरण के स्तरों को भी देखना होगा और फिर उहदेदारों को, हर सतह के उहदेदारों को, एक हलक़े के ओहदेदार से ले के, रीजन के उहदेदारों से ले के मर्कज़ी उहदेदारों तक अपने जायज़े लेने की आवश्यकता है कि क्या जो अन्सारुल्लाह का नाम है हम हक़ीक़त में इस नाम का सम्मान कर रहे हैं? हक़ीक़त में इस के अनुसार अपनी ज़िन्दगियां व्यतीत कर रहे हैं? अत: प्रत्येक नासिर ख़ुद अपनी यह समीक्षा कर सकता है। अब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ जो हमें और अधिक इस तरफ़ ध्यान दिलाते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं कि

"मैं खोल कर कहता हूँ कि जब तक हर बात पर अल्लाह तआला मुक़द्दम न हो जाए और दिल पर नज़र डाल कर वह न देख सके कि यह मेरा ही है।" अर्थात ऐसा मुक़द्दम हो जाए कि अल्लाह तआला ख़ुद यह वर्णन करे कि यह बन्दा जो है यह मेरा ही है और मेरे आदेशों का अनुकरण कर रहा है। आप ने फ़रमाया "उस समय तक कोई सच्चा मोमिन नहीं कहला सकता। ऐसा आदमी तो ऑल (जन साधारण) के तौर पर मोमिन या मुसलमान है। जैसे चूहड़े को भी मुसल्ली या मोमिन कह देते हैं।" फ़रमाते हैं "मुसलमान वही है जो اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ का मिस्दाक़ हो गया हो। वजहो मुँह को कहते हैं मगर उस का अभिप्राय हस्ती और वजूद पर भी होता है। अत: जिसने सारी शक्तियां अल्लाह के समक्ष रख दी हों वही सच्चा मुसलमान कहलाने का अधिकारी है।" आप फ़रमाते हैं कि "मुझे याद आया कि एक मुसलमान ने किसी यहूदी को इस्लाम की तब्लीग़ की कि तू मुसलमान हो जा।" मुसलमान जो था वह फ़रमाया कि "मुसलमान ख़ुद दुराचार में पड़ा हुआ था।" बुराईयों में पड़ा था। " यहूदी ने इस दुराचारी मुसलमान को कहा कि तू पहले अपने आपको देख" मुझे जो तब्लीग़ कर रहा है "और तो इस बात पर गर्व न कर कि तू मुसलमान कहलाता है। ख़ुदा तआला इस्लाम का अर्थ चाहता है न नाम और शब्द। यहूदी ने अपना क़िस्सा वर्णन किया" इस मुसलमान को " कि मैंने अपने लड़के का नाम ख़ालिद रखा था मगर दूसरे दिन मुझे इसे क़ब्र में गाड़ना पड़ा।" दूसरे दिन मर गया। ख़ालिद का अर्थ हमेशा रहने वाला है। कहने लगा कि "यदि केवल नाम ही में बरकत होती तो वह क्यों मरता। यदि कोई मुसलमान से पूछता है कि क्या तू मुसलमान है? तो वह जवाब देता है। अल्हम्दो लिल्लाह।" परन्तु केवल नाम के मुसलमान। अत: आप ने अपनी जमाअत को फ़रमाया कि तुम नाम के मुसलमान न बनो।

फिर इस बात की वज़ाहत करते हुए कि मुंह की बातें कहीं काम नहीं आती, बातें काम नहीं आतीं बल्कि कर्म हैं जो काम आते हैं। आप फ़रमाते हैं कि "अत: याद रखो कि केवल लफ़्फ़ाज़ी और मौखिक

बातें काम नहीं आ सकती जब तक कि अनुकरण न हो। केवल बातें अल्लाह तआला के नकट कुछ भी मर्यादा नहीं रखतीं अत: ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है। كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (अस्सफ़:4)

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 76-77)कि अल्लाह के निकट इस बात का दावा करना जो तुम करते नहीं बहुत अप्रिय बात है।

अत: हमें इस बात की समीक्षा करने की ज़रूरत है कि क्या हमारे कथन तथा कर्म बराबर हैं, نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ अर्थात हम अल्लाह के अन्सार हैं का दावा हमारे कर्म से प्रमाणित है या नहीं?हम इस्लाम को दुनिया में फैलाने का दावा करते हैं। इस को पूरा करने के लिए हमारी अपनी कोशिश और हालत क्या है यह देखने की ज़रूरत है। फिर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

यदि तुम इस्लाम का समर्थन और सेवा करना चाहते हो तो पहले ख़ुद तक़्वा और पवित्रता धारण करो जिससे ख़ुद तुम ख़ुदा तआला की पनाह के मज़बुत क़िला में आ सको और फिर तुम इस सेवा का सौभाग्य और योग्यता प्राप्त हो''तुम्हें इस सेवा का सौभाग्य और योग्यता प्राप्त हो अल्लाह तआला की पनाह के क़िला में आओ। फ़रमाया कि ''तुम देखते हो कि मुसलमानों की बाहरी ताक़त कैसी कमज़ोर हो गई है। कौमें उनको नफ़रत तथा घृणा की नज़र से देखती हैं। यदि तुम्हारी अंदरूनी और भीतरी ताक़त भी कमज़ोर और हीन हो गई तो बस फिर तो ख़ात्मा ही समझो।''तुम तो बड़े दावे करते हो, मुसलमानों की हालत आजकल तो और भी अधिक पस्त प्रकट हो रही है। फ़रमाया कि यदि तुम अहमदी हो के भी यही रहे तो फिर तो ख़ात्मा ही समझना। फ़रमाया कि ''तुम अपने नफ़सों को ऐसे पवित्र करो कि क़ुदसी क़ुव्वत उनमें प्रवेश करे और वह सरहद के घोड़ों की तरह मज़बूत और सुरिक्षत हो जाएं। अल्लाह तआला का फ़ज़ल हमेशा मुत्तक़ियों और सच्चों ही के साथ हुआ करता है। अपने आचरण और आदतें ऐसे न बनाओ जिनसे इस्लाम को दाग़ लग जाएं। बुरा काम करने वालों और इस्लाम की शिक्षा पर अनुकरण न करने वाले मुसलमानों से इस्लाम को दाग़ लगता है।''फ़रमाया कि बुरा काम करने वालों और इस्लाम की शिक्षा पर अनुकरण न करने वाले मुसलमान जो हैं वे तो इस्लाम को दाग़ लगाने वाले हैं। फ़रमाया ''कोई मुसलमान शराब पी लेता है तो कहीं उलटी करता फिरता है। पगड़ी गले में होती है। मोरियों और गंदी नालियों में गिरता फिरता है। पुलिस के जूते पड़ते हैं। हिंदू और ईसाई इस पर हंसते हैं। इस का शरीयत के विरुद्ध इस तरह का काम उस के ही उपहास का कारण नहीं होता बल्कि वास्तव में उस का प्रभाव इस्लाम तक है।'' एक व्यक्ति का कर्म जो है वो इसी तक सीमित नहीं रहता बल्कि उस के प्रभाव फिर इस्लाम तक पहुंचते हैं। लोग कहते हैं यह मुसलमान है दावा यह करता है कर्म यह करता है। फ़रमाया ''....अपनी बुरे कामों से केवल अपने आपको नुक़्सान नहीं पहुंचाते बल्कि इस्लाम पर हंसी कराते हैं।' फिर फ़रमाया '' अत: अपने चाल चलन और आदतों को ऐसे बना लो कि कुफ़्फ़ार को भी तुम पर (जो दरअसल इस्लाम पर होती है आरोप लगाने का अवसर न मिले।'

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 77-78)

(शेष.....)